अनुप जलोटा-वो काला एक बांसुरी वाला
वो काला एक बांसुरी वाला

वो काला एक बांसुरी वाला
सुध बसिरा गया मोरी रे
सुध बसिरा गया मोरी
माखन चोर वो नंदकशिोर
कर गयो रे, कर गयो मन की चोरी रे
सुध बसिरा गया मोरी

पनघट पे मोरी, बैंया मरोड़ी
मैं बोली तो मेरी मटकी फोडी
पैयां पडू करू वनिती मैं पर
माने ना एक मोरी रे
सुध .....

वो काला एक...

छुप गयो फरि एक तान सूना के
कहाँ गयो एक बाण चला के
गोकुल ढुंढा मैंने मथुरा ढुंढी
कोई नगरयिा ना छोडी रे
सुध.....